आध्यात्मिक दृष्टिसे स्त्रीके लिए उपयुक्त वस्त्र

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण विषय '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

- **भूमिका** ९
- **ग्रंथके ज्ञानसंबंधी सूक्ष्म-विश्वके 'एक विद्वान'द्वारा भाष्य** १०
- **'सूक्ष्म' शब्दके संदर्भमें कुछ संज्ञाओंका अर्थ** १४
- **कुछ आध्यात्मिक संज्ञाओंका अर्थ** १६
- **ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधिकाओंका परिचय** १७
- **संस्कृत भाषानुरूप हिंदी भाषाके प्रयोग हेतु सनातनका समर्थन !** १९

१. शरीर सात्त्विक वस्त्रोंसे आच्छादित न होनेपर एवं होनेपर व्यक्तिद्वारा ग्रहण की जानेवाली अनिष्ट अथवा अच्छी शक्तिकी मात्रा २०

२. स्त्रियोंके परिधानके विभिन्न प्रकार २०

२ अ. विदेशी परंपरानुसार (संस्कृतिनुसार) अनुचित परिधान २०

* पंजाबी परिधान पहननेसे हानि २१
* शर्ट-पैंट पहननेसे मांत्रिकके लिए आक्रमण करना सुविधाजनक २५
* बिन बांहोवाले टॉप-पैंट, टॉप-स्कर्ट पहननेके दुष्परिणाम २५
* छोटे अथवा अपर्याप्त परिधान धारण करना अर्थात अनिष्ट शक्तियोंको आमंत्रण देना ! २८
* अनिष्ट शक्तियोंसे पीडित लोगोंको विदेशी संस्कृतिके वस्त्र अच्छे लगना ३१

२ आ. हिंदू संस्कृतिके अनुसार उचित परिधान ३३

२ आ १.घाघरा-कंचुकी एवं उनका कुंडलिनीचक्रोंसे संबंध ३३

२ आ २. साडी ३५

* साडीके कारण देवताके तत्त्वकी अनुभूति होना ३६
* नौ गजकी साडीके आंचलके छोरोंसे स्त्रीकी रक्षा होना ४३

* छः गजकी साडी पहनते समय आध्यात्मिक उपाय होना एवं साडी पहननेकी उचित पद्धति समझमें आना ४६
* स्त्रियोंद्वारा साडीका आंचल सिरपर लेनेकी पद्धति ५९
* नई साडी पहननेकी प्रथा ६३
* प्रसादरूपी साडी पहननेसे प्राप्त लाभ तथा उस संदर्भमें हुई अनुभूतियां ६४
* आध्यात्मिक दृष्टिसे उन्नत साधिकाके चैतन्यसे प्रभारित साडी पहननेपर हुई अनुभूति ७०

२ आ ३. शाल ७१

२ इ. स्त्रियोंके विविध वस्त्रोंकी तुलना ७२

२ ई. स्त्रियोंके लिए शरीरके ऊपरी भागमें पहनने योग्य परिधानोंके प्रकार एवं रंगोंके अनुसार उनसे प्राप्त सात्त्विकता ९०

२ उ. स्त्रियोंके परिधानोंके प्रकार तथा उनसे प्राप्त अनिष्ट अथवा अच्छी शक्तिकी मात्रा ९३

२ ऊ. स्त्रियोंके परिधानोंके प्रकार तथा उनके अनिष्ट अथवा अच्छी शक्तियोंसे प्रभारित होनेकी मात्रा ९४

३. बच्चोंके परिधान ९५

४. हिंदुओ, अधर्माचरण न करें, यदि हो रहा हो, तो उसे रोकें ! ९६

५. सात्त्विक वस्त्र-अलंकारोंके साथ ही आचार-विचार भी सात्त्विक होना आवश्यक ९७

६. भावयुक्त तथा अच्छे आध्यात्मिक स्तरके, संत तथा गुरुकृपायोगानुसार साधना करनेवाले साधकोंके लिए बाह्य वेशभूषाको महत्त्व देनेकी आवश्यकता न होना ९७

भूमिका

विदेशी संस्कृतिसे प्राप्त परिधान; जैसे जीन्स, टी-शर्ट, चूडीदार, पंजाबी परिधान आजकल हिंदू स्त्रीकी जीवनशैलीका एक अविभाज्य भाग बन गए हैं । इसके विपरीत हिंदू संस्कृतिकी पहचान परंपरागत 'साडी'का अस्तित्व अब सीमित रह गया है । 'नौ गजकी साडी'का उपयोग आज अधिकांशतः ग्रामीण क्षेत्रों तक ही दिखाई देता है । व्यक्तिके परिधानका प्रभाव सहज ही उसकी मनोवृत्तिपर होता है । वर्तमानमें प्रचलित राजसिक-तामसिक परिधानसे स्त्रीकी वृत्ति उच्छृंखल एवं भोगवादी बनती है, तो छः गजकी एवं नौ गजकी साडी जैसे सात्त्विक परिधानसे स्त्रीकी वृत्ति सुशील एवं धार्मिक बनती है । धर्माचरणसे ईश्वरके प्रति भक्तिभाव निर्मित होता है एवं व्यक्ति ईश्वरप्राप्तिके मार्गका पथिक हो जाता है ।

राजसिक-तामसिक परिधानकी एक अन्य हानि यह है कि इस परिधानसे मनुष्यको अनिष्ट शक्तिद्वारा पीडा होनेकी आशंका बढती है । इसके विपरीत सात्त्विक परिधान अनिष्ट शक्तियोंके साथ युद्धमें एक अमोघ शस्त्र बन जाता है । प्रस्तुत ग्रंथमें यह स्पष्ट किया गया है कि विदेशी संस्कृतिसे अपनाया गया परिधान किस प्रकार अनुचित है तथा हिंदू संस्कृतिका परंपरागत परिधान किस प्रकार लाभदायी है । इसकी अध्यात्मशास्त्रीय कारणमीमांसा भी दी है ।

'अध्यात्म', सूक्ष्मसंबंधी बोधका अर्थात अनुभूतिका शास्त्र है । इसलिए विविध वेशभूषा धारण करनेसे सूक्ष्म-स्तरपर उनका निश्चितरूपसे क्या परिणाम होता है यह दर्शानेवाले, साधिकाओंद्वारा किए प्रयोग तथा वेशभूषासंबंधी सूक्ष्म-ज्ञानविषयक चित्रों एवं साधकोंकी अनुभूतियोंको भी इस ग्रंथमें अंतर्भूत किया है ।

जीवनमें प्रत्येक कृत्य सात्त्विक करनेका प्रयास करना अर्थात जीवनका अध्यात्मीकरण । साडी जैसा सात्त्विक परिधान धारण करना जीवनके अध्यात्मीकरणका ही एक भाग है । स्त्रियोंद्वारा विदेशी संस्कृतिके परिधान अपनानेसे भावी पीढीपर भी अनुचित संस्कार होंगे । सुसंस्कृत एवं आदर्श पीढीकी निर्मितिका दायित्व अब आजकी स्त्रियोंपर है ।

श्री गुरुचरणोंमें यही प्रार्थना है कि रज-तमसे ग्रसित इस कलियुगमें सात्त्विक परिधानके साथ साधना करनेसे ही रज-तमसे संपूर्ण रक्षा होगी एवं आनंद प्राप्त होगा । ऐसा करनेकी सद्‌बुद्धि सबको हो । **- संकलनकर्ता**